بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़ दिनांक 25.03.16 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

23 मार्च का दिन अहमदिया जमाअत में बड़ा महत्त्व पूर्ण दिन है। इस दिन अल्लाह तआला ने जो उम्मत-ए-मुहम्मदिया अथवा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक वादा फ़रमाया था वह पूरा हुआ तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई तथा इस्लाम के पुनर्रोत्थान के दौर का शुभारम्भ हुआ।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

दो दिन पहले 23 मार्च थी। यह दिन अहमदिया जमाअत में बड़ा महत्त्व पूर्ण दिन है। इस दिन अल्लाह तआला ने जो उम्मत-ए-मुहम्मदिया अथवा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक वादा फ़रमाया था वह पूरा हुआ तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई तथा इस्लाम के पुनर्रोत्थान के दौर का शुभारम्भ हुआ। अल्लाह तआला ने इस दिन हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को, इस दिन मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और महदी मअहूद होने के ऐलान की अनुमति प्रदान की जिन्होंने जहाँ ख़ुदा तआला की वहदानियत (एकेश्वर वाद) को दुनया में क़ायम करने के लिए बराहीन व दलायल (निशान तथा तर्क) पेश करने थे वहाँ दीन-ए-इस्लाम की उत्तमता समस्त धर्मों पर पूर्ण एंव सम्पूर्ण दीन के रूप में प्रमाणित करनी थी तथा अल्लाह तआला के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को दिलों में भरना था। अतः हम वे भाग्यशाली लोग हैं जो मसीह मौऊद की जमाअत में शामिल हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानना जहाँ ख़ुशी तथा धन्यवाद का अवसर है वहाँ हमारे दायित्वों को भी बढ़ाता है। अतः हमें इन कर्त्तव्यों की पहचान तथा इनकी अदायगियों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारे कर्त्तव्य क्या हैं? हमारे दायित्व, उन कामों को आगे चलाना है जिनकी अदायगी के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवतरित हुए तभी हमारी गणना उन लोगों में हो सकती है जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर नई ज़मीन तथा नया आसमान बनाने वालों में शामिल होना था। अतः उन दायित्वों को समझने के लिए हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर ही देखना होगा कि आपकी नियुक्ति के उद्देश्य क्या थे और हमने उनको किस हद तक समझा है और अपने ऊपर लागू किया है तथा उनको आगे फैलाने मे अपनी भूमिका निभाई है या भूमिका अदा कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि वे काम जिनके लिए मुझे ख़ुदा ने नियुक्त किया है वे ये हैं कि ख़ुदा में तथा उसके बन्दों के रिश्ते में जो दोष हो गया है उसको दूर करके मुहब्बत और निष्ठा के सम्बंध को पुनः स्थापित करूँ तथा दूसरी बात कि सत्य को प्रकट करके धार्मिक युद्धों को समाप्त करके सन्धि की बुनियाद डालूँ। फिर यह कि दीन की सच्चाईयाँ जो दुनया की आँख से लुप्त हो गई हैं उनको प्रकट कर दूँ, चौथी बात यह कि वह रूहानियत जो तामसिकवृत्तियों के अन्धकारों के नीचे दब गई है उसका नमूना दिखलाऊँ। फिर यह कि ख़ुदा की शक्तियाँ जो इंसान के अन्दर दाख़िल होकर ध्यान अथवा दुआ के द्वारा प्रकट होती हैं, वास्तविकता के रूप में, न केवल कथनों के रूप में, उनको बयान करूँ तथा सबसे अधिक यह कि वह शुद्ध एवं चमकती हुई तौहीद जो प्रत्येक शिर्क की मिलावट से पवित्र है उसका पुनः क़ौम में पौधा लगा दूँ। और यह सब कुछ मेरे सामर्थ्य से नहीं होगा बल्कि उस ख़ुदा की शक्ति के द्वारा होगा जो आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है।

अतः इस उद्धरण में सात बुनियादी और महत्त्व पूर्ण बातें बयान की गई हैं जो इस ज़माने की आवश्यकता है जिसका सारांश इस उद्धरण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है। और जब आपने यह फ़रमाया कि इस कार्य के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है तो प्रत्यक्षतः इसका अर्थ यही है कि आपके मानने वाले इन बातों को अपने अन्दर पैदा करके इस्लाम की सुन्दरता और जीवित धर्म होने को दुनया को दिखाएँ। अतः हमारा पहला तथा सबसे बड़ा कर्त्तव्य जो बनता है कि ख़ुदा तआला से सम्बंध में बढ़ें और इसे दृढ़ करें। ख़ुदा तआला तथा उसके रसूल और उसके दीन से सम्बंध और मुहब्बत और निष्ठा में बढ़ें। दुनया को बताएँ कि मसीह मौऊद के आगमन के साथ धार्मिक युद्धों का समापन हो चुका है। यह एक उद्देश्य है तथा दुनया को एक उम्मत बनाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह सच्चा ग़ुलाम ही है जिसे अल्लाह तआला ने समस्त नबियों के लिबास में भेजा। आपके मिशन के अनुसार इस्लाम की सुन्दर शिक्षा तथा उसकी सच्चाई हमने दुनया पर स्पष्ट करनी है

तथा इसके लिए हमें अपने कर्मों को नमूना बनाना होगा, आध्यात्मिकता में बढ़ने के नमूने भी हमें स्थापित करने होंगे, अपने मन की अनुचित अभिलाषाओं को दूर करना होगा। दुनया को दिखाना होगा कि वह ख़ुदा आज भी उसी प्रकार दुआएँ सुनता है और अपने निष्ठावान बन्दों को, अपने दूतों को उत्तर भी देता है जिस प्रकार पहले देता था। अपने निष्ठावान बन्दों के दिलों की संतुष्टि के साधन भी करता है। दुनया को हमने बताना है कि अल्लाह तआला वाहिद व यगाना (एक,अकेला) है। प्रत्येक वस्तु का विनाश होने वाला है, समाप्त होने वाली है केवल उसी का अस्तित्व है जो अनन्त काल से है तथा सदैव रहेगा। अतः हमारा अस्तित्व उस वाहिद व यगाना तथा सदैव रहने वाले ख़ुदा से जुड़ने में ही है। जब 23 मार्च को हम मसीह मौऊद दिवस मनाते हैं तो हमें इन बातों का भी निरीक्षण करना चाहिए कि ये बातें हज़रत मसीह मौऊद दुनया में पैदा करने आए थे और हम जो आपके मानने वाले हैं, क्या हममें ये बातें पैदा हो गई हैं अथवा क्या हम इस आन्दोलन को अपने भीतर पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। फिर अन्य अनेक स्थानों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी नियुक्ति के उद्देश्य तथा लक्ष्य की कुछ रूप रेखा भी बयान फ़रमाई है। आप अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण मैं पेश करता हूँ। एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि यह विनीत तो केवल इस उद्देश्य के लिए भेजा गया है ताकि यह पैग़ाम अल्लाह के बन्दों को पहुंचा दे कि वर्तमान समस्त धर्मों में से वह धर्म सत्य पर आधारित है तथा ख़ुदा तआला की इच्छानुसार है जो क़ुरआन करीम लाया है और मुक्ति के द्वार में प्रवेश होने के लिए **ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** है।

फिर एक अवसर पर आपने फ़रमाया- इस बात को भी मेरे दिल से सुनो कि मेरी नियुक्ति का मूल उद्देश्य क्या है, आश्य क्या है, लक्ष्य क्या है? मेरे आने का लक्ष्य तथा उद्देश्य केवल इस्लाम का नवीनीकरण एवं समर्थन है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि मैं इस लिए आया हूँ कि कोई नई शरीअत सिखाऊँ अथवा नए आदेश दूँ या कोई नई किताब नाज़िल होगी। कदापि नहीं, यदि कोई व्यक्ति यह विचार रखता है तो मेरी दृष्टि में वह बड़ा पथभ्रष्ट तथा बेदीन है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शरीअत और नबूव्वत का समापन हो चुका है, अब कोई नई शरीअत नहीं आ सकती, क़ुरआन मजीद ख़ातमुल किताब है, इसमें तनिक सी भी नयूनाधिकता के लिए स्थान नहीं है। हाँ, यह सत्य है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकतें और फ़ैज़ान तथा क़ुरआन शरीफ़ की शिक्षा और हिदायत के फलों का समापन नहीं हो गया। वे प्रत्येक युग में ताज़ा बताज़ा विद्यमान हैं तथा उन्हीं फ़ैज़ानों तथा बरकतों के प्रमाण के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा किया है। फिर एक अवसर पर मसीह मौऊद की नियुक्ति के उद्देश्य बयान फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि मेरे आने के दो उद्देश्य हैं, मुसलमानों के लिए यह कि वास्तविक तक़्वा एवं पवित्रता पर स्थापित हो जाएँ और वे ऐसे सच्चे मुसलमान हों जो मुसलामन शब्द के भावार्थ में अल्लाह तआला ने चाहा है और ईसाईयों के लिए सलेब का टूटना हो तथा उनका बनावटी ख़ुदा नज़र न आवे, दुनया उसको बिल्कुल भूल जावे। एक अकेले ख़ुदा की इबादत हो। मेरे इन उद्देश्यों को देखकर ये लोग मेरा विरोध क्यूँ करते हैं। और याद रक्खो मेरा सिलसिला यदि केवल दुकानदारी है तो इसका नाम व निशान मिट जाएगा परन्तु यदि ख़ुदा तआला की ओर से है तथा निःसन्देह उसी की ओर से है तो सारा संसार चाहे इसका विरोध करे, यह बढ़ेगा और फैलेगा और फ़रिश्ते इसकी रक्षा करेंगे (इन्शाअल्लाह) यदि एक व्यक्ति भी मेरे साथ न हो तथा कोई भी सहायता न दे तब भी मैं विश्वास रखता हूँ कि यह सिलसिला सफल होगा। आज 127 वर्ष पूरे होने के पश्चात भी हम देखते हैं कि अल्लाह तआला के समर्थन आपके साथ हैं और यह लिससिला अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से प्रगति कर रहा है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी अवस्थाओं में पवित्र बदलाव पैदा करते हुए अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक बनाएँ तथा उस फ़ैज़ से लाभान्वित हों जो आपकी नियुक्ति का उद्देश्य है, जो आपको मानने से मिलना है अन्यथा जैसा कि आपने फ़रमाया कि आपको हममें से किसी की भी आवश्यकता नहीं। अल्लाह तआला स्वयं ही फ़रिश्तों के द्वारा आपकी मदद फ़रमाकर आपके सिलसिले को उन्नति दे सकता है और देता है।

फिर अपनी नियुक्ति के उद्देश्य को बयान फ़रमाते हुए एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने मुझे नियुक्त किया है कि मैं उन गुप्त भंडारों को दुनया पर प्रकट करूँ तथा अपवित्र आरोपों का कीचड़ जो इन चमकदार पन्नों पर थोपा गया है, उससे उनको पाक व साफ़ करूँ, ख़ुदा तआला का स्वाभिमान इस समय बड़े जोश में है कि क़ुरआन शरीफ़ के सम्मान को प्रत्येक दुष्ट शत्रु की आपत्ति के धब्बे से पवित्र एंव शुद्ध करे। अभिप्रायः यह है कि ऐसी दशा में कि विरोधी लोग क़लम के द्वारा हम पर वार करना चाहते हैं और करते हैं, कितनी मूर्खता होगी कि हम उनसे लट्ठम लट्ठा हो जाएँ। मैं तुम्हें खोल कर बतलाता हूँ कि ऐसी स्थिति में यदि कोई इस्लाम का नाम लेकर युद्ध एंव आक्रमण का मार्ग अपनाए तो वह इस्लाम को बदनाम करने वाला होगा और इस्लाम की कभी भी ऐसा इच्छा न थी कि अकारण ही बिना आवश्यकता के तलवार उठाई जाए। इस लिए आवश्यकता है कि सर्वप्रथम अपनी बुद्धि एंव मस्तिष्क से काम लें और अपनी आत्मा को पवित्र करें। सद्मार्ग एवं तक़्वा के द्वारा ख़ुदा तआला से सहायता एवं विजय चाहें। यह ख़ुदा तआला का एक अटल क़ानून तथा दृढ़ नियम है और यदि मुसलमान केवल बातों तथा

चर्चाओं के द्वारा मुक़ाबले में विजय और सफलता प्राप्त करना चाहें तो यह सम्भव नहीं। अल्लाह तआला झूठी प्रशंसाओं और शब्दों को नहीं चाहता, वह तो वास्तविक तक़्वा को चाहता तथा सच्ची पवित्रता को पसन्द फ़रमाता है। जैसा कि फ़रमाया إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ अतः यह तक़्वा जो हमने अपने अन्दर पैदा करके इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को दुनया को बतानी है। मुसलमानों को भी बताना है कि इस्लाम के फैलने के लिए तक़्वा की शर्त है। अतः बजाए अत्याचार और निर्दयता में बढ़ने के, तक़्वा पैदा करो और तक़्वा में बढ़ो। यह इस्लाम के नाम पर जो हमले होते हैं, ये इस्लाम के समर्थन में नहीं हैं बल्कि ये बदनामी का कारण हैं तथा निर्दोषों की हत्या अल्लाह तआला की अप्रसन्नता का कारण बन रही है।

पिछले दिनों में जो बैल्जियम में निर्दोषों की हत्या हुई, यह आतंक जो हुआ है जिसके कारण दर्जनों निर्दोष हताहत हुए हैं तथा सैकड़ों ज़ख़्मी भी हुए हैं, ये कभी भी ख़ुदा तआला की प्रसन्नत प्राप्त करने वाले नहीं हो सकते और इस ज़माने में जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुल कर बता दिया है कि अब दीन के लिए आक्रमण एंव युद्ध वर्जित है, ये गतिविधयाँ ख़ुदा तआला की नाराज़गी का कारण बन रही हैं और इस ज़माने में कोई नहीं कह सकता कि हमें यह पैग़ाम नहीं पहुंचा है। प्रत्येक जानता है कि यह सन्देश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बड़ा स्पष्ट है कि अब दीन के लिए ये युद्ध हराम हैं। अल्लाह तआला दीन के लिए अत्याचार करने वालों अथवा मुसलमान होते हुए ज़ुल्म करने वालों को बुद्धि प्रदान करे। चाहे वे सरकारें हैं अथवा गिरोह हैं कि वे ज़माने के इमाम की आवाज़ को सुनें तथा अत्याचारों से रुक जाएँ तथा उस वास्तविक हथ्यार को उपयोग में लाएँ जो इस ज़माने में मसीह मौऊद को प्रदान किया गया है। आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि इस समय जो आवश्यकता है, वह निस्सन्देह समझ लो कि तलवार की नहीं अपितु क़लम की है। हमारे विरोधियों ने इस्लाम पर जो सन्देह किए हैं तथा विभिन्न चालों एंव वैज्ञानिक अनुष्ठानों के द्वारा अल्लाह तआला के सच्चे मज़हब पर आक्रमण करना चाहा है उसने मेरा ध्यान केन्द्रित किया है कि मैं क़लम का हथ्यार पहन कर इस विज्ञान एंव ज्ञान की उन्नति के युद्ध स्थल पर उतरूँ और इस्लाम के आध्यात्मिक शौर्य तथा भीतरी शक्ति का चमत्कार भी दिखलाऊँ। मैंने एक समय पर इन आपत्तियों एंव आक्रमणों की गणना की थी जो इस्लाम पर हमारे विरोधियों ने किए हैं तो उनकी संख्या मेरे विचार तथा अनुमान के अनुसार तीन हज़ार हुई थी। ये आपत्त्याँ तो बुद्धि हीनों तथा नादानों की दृष्टि में आपत्तियाँ हैं परन्तु मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मैंने जहाँ इन आपत्त्यों की गणना की वहाँ यह भी विचार किया है कि इन आपत्त्यों की तह में, वास्तव में अत्यधिक मूल्यवान सच्चाईयाँ विद्यमान हैं जो विवेक हीनता के कारण आपत्ति कर्ताओं को दिखाई नहीं दीं और वास्तव में यह ख़ुदा तआला की हिकमत है कि जहाँ नेत्रहीन आपत्ति कर्ता आकर अटका है वहीं वास्तविकता एंव ज्ञान का भंडार रक्खा है। फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि अल्लाह तआला ने इस्लाम के प्रकाश को दिखलाने के लिए आपको भेजा है तथा यह कि ईसाईयत का विश्वास तो ऐसा है जिसकी स्वयं उन्हें भी समझ नहीं। आप फ़रमाते हैं कि यह तो गले पड़ा ढोल है जो ये लोग बजा रहे हैं। अभिप्रायः यह यह कि इन लोगों के विश्वासों का कहाँ तक वर्णन किया जावे, वास्तविकता वही है जो इस्लाम लेकर आया है और ख़ुदा तआला ने मुझे नियुक्त किया कि मैं उस नूर को जो इस्लाम में मिलता है, उनको जो सत्य के अभिलाषी हों, दिखाऊँ। सच यही है कि ख़ुदा है। यह गर्व एंव उच्चतम स्तर इस्लाम को ही प्राप्त है कि प्रत्येक ज़माने में समर्थन के निशान इसके साथ होते हैं और इस ज़माने को भी ख़ुदा ने वंचित नहीं रक्खा। मुझे इसी उद्देश्य के लिए भेजा है कि इन समर्थन के निशानों के द्वारा जो इस्लाम की विशेषता है, इस ज़माने में इस्लाम की सत्यता दुनया पर प्रकट करूँ। मुबारक वह जो एक सद्चित लेकर मेरे पास सत्य प्राप्त करने के लिए आता है और फिर मुबारक वह जो हक़ देखे तो उसे क़बूल करता है।

फिर मुसलमानों के भी ग़लत विश्वास का रद्द करते हुए कि हज़रत ईसा आसमान पर जीवित हैं, इस यथार्थ को भी खोल कर मुसलमानों को बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे इस लिए भेजा है ताकि मैं उस ग़लत धारणा का विनाश करूँ, उसे जड़ से उखेड़ दूँ जो ईसाईयों ने मुसलमानों में पैदा कर दी है। एक अवसर पर मसीह की आवश्यकता के विषय में बयान करते हुए आप फ़रमाते हैं कि इस समय मसीह के आने की क्या आवश्यकता है? सवाल है। यदि दूसरी आवश्यकताओं एंव कारणों को छोड़ दिया जावे तो मूसा अलै. के सिलसिले के समरूप होने के लिए भी बड़ी आवश्यकता है। इस लिए कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौद्हवीं शताब्दी में आए थे। अर्थात मैं तो समरूपता का एक उदारहण पेश करता हूँ परन्तु जो यह कहते हैं कि नहीं, स्वयं हज़रत मसीह ही दोबारा आएँगे, उन्हें भी तो कोई उदारण पेश करना चाहिए और यदि वे नहीं कर सकते तथा निस्सन्देह नहीं कर सकते तो फिर क्यूँ ऐसी बात करते हैं जो मुहद्दसात में से है, जो नई पैदा की गई बातें हैं। इन नई बातों से बचो क्यूँकि यह विनाश का मार्ग है। मुझे मुसमानों की स्थिति पर खेद होता है कि उनके सामने यहूदियों का एक उदाहरण पहले से विद्यमान है और पाँच समय ये अपनी नमाज़ों में **ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम** की दुआ करते हैं तथा यह भी सर्वसम्मति से मानते हैं कि इससे अभिप्रायः यहूद हैं। फिर मेरी समझ में नहीं आता कि इस मार्ग को ये क्यूँ अपनाते हैं। हज़रत

अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी सत्यता पर चार प्रकार के निशानों का वर्णन फ़रमाते हुए कि प्रथम अरबी भाषा के ज्ञान का निशान है और यह उस समय से मुझे मिला है जब से कि मुहम्मद हुसैन बटालवी साहब ने यह लिक्खा कि यह विनीत (ह. मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) अरबी भाषा का एक व्याकरण भी नहीं जानता जबकि हमने पहले कभी दावा भी नहीं किया था कि अरबी की व्याकरण आती है। किस प्रकार अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से सहायता की है। फिर हमने उन रचनाओं को इनाम की घोषणाओं के साथ प्रकाशित किया है और कहा है कि तुम जिससे चाहो सहायता ले लो और चाहे अरबी भाषा के विद्वानों को भी मिला लो। मुझे ख़ुदा तआला ने इस बात का विश्वास दिला दिया है वे कदापि सक्षम नहीं हो सकते क्यूँकि ये निशान क़ुरआन-ए-करीम के चमत्कारों में से छवि के रूप में मुझे दिया गया है।

दूसरा यह कि दुआओं का क़बूल होना। मैंने अरबी रचनाओं के समय यह परीक्षण करके देख लिया है कि कितनी बड़ी संख्या में मेरी दुआएँ क़बूल हुई हैं। तीसरा निशान पेशगोईयों का है अर्थात परोक्ष की बातों को प्रकट करना। इलहाम प्राप्त करने वाले का परोक्ष को प्रकट करना अपने भीतर इलाही शक्ति तथा ख़ुदाई भयावहता रखता है। अतः क़ुरआन-ए-करीम ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया है- لا یظھر علی غیبہ احدا الا من ارتضی من رسول यहाँ इज़हार का शब्द ही प्रकट करता है कि उसके अन्दर एक वैभवता एवं शक्ति होती है। चौथा निशान क़ुरआन-ए-करीम के सूक्ष्म ज्ञान एवं विवेक का है। क्यूँकि क़ुरआन के विवेक बिन्दु उस व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसी पर नहीं खुल सकते, जिसको पवित्र किया गया हो। لا یمسہ الا المطھرون मैंने कई बार कहा है कि मेरे विरोधी भी एक सूरः की तफ़सीर करें और मैं भी तफ़सीर करता हूँ। फिर तुलना कर ली जावे परन्तु किसी ने साहस नहीं किया। इस प्रकार ये चार निशान हैं जो विशेष रूप से मेरी सत्यता के लिए मुझे मिले हैं।

अतः हम भाग्यशाली हैं कि हमने आने वाले मसीह मौऊद को मान लिया तथा बैअत के साथ अपने अन्दर पवित्र बदलाव पैदा करने तथा क़ुरआन की शिक्षा को अपने ऊपर लागू करने की प्रतिज्ञा की और उन लोगों में शामिल हुए जो शुक्र के सजदे अदा करने वाले हैं, न कि नज़रें बचाकर गुज़र जाने वाले। यह अल्लाह तआला का हम पर फ़ज़्ल और अहसान है कि अल्लाह तआला ने हमें उस ज़माने में पैदा किया जब मसीह मौऊद का आगमन हुआ तथा इस्लाम के पुर्नोत्थान का शुभारम्भ हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें उस ख़ुदा से मिलाया जो जीवित ख़ुदा है, जो आज भी सुनता है और बोलता है जैसे पहले सुनता और बोलता था। अतः हमें आभारी होना चाहिए। इसके अंतर्गत एक अन्य बात भी करना चाहता हूँ। गतदिनों में 23 मार्च के संदर्भ में कुछ लोग एक दूसरे को masseges के द्वारा जो आजकल माध्यम है, मुबारकबाद दे रहे थे, फ़ोन पर वाट्स अप्प इत्यादि पर। यदि इस नीयत से बधाईयाँ दी थीं कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना और इस बात का शुक्र और बधाई थी कि आपके मानने से हम उन सत्मार्गी लोगों में शामिल हो गए जो दीन के सहायक और उसकी विशेषताओं को दुनया में फैलाने वाले हैं तो निःसन्देह ये बधाइयाँ दें, देना मुबारकबाद, देने वालों का अधिकार था इसमें कोई बुराई नहीं तथा इसमें कोई बिदअत भी नहीं। मुझे आश्चर्य है कि इन बधाईयाँ देने वालों को एक साहब ने उन्हीं पैग़ामों में एक सन्देश के द्वारा पत्र लिख कर कठोरता से रोका और कहा कि इस प्रकार तुम लोग नई नई बातों में पड़ जाओगे। अतः उन साहब को भी ख़िलाफ़त की ढाल के पीछे रहते हुए बात करनी चाहिए थी, ख़िलाफ़त के क़दमों से आगे बढ़ने का प्रयास न करें, जो भी करेगा वह फिसल जाएगा यह याद रक्खें, यदि उनके दिल में कुछ सुरक्षा की भावनाएँ थीं तो उन्हें चाहिए था कि मुझे लिखते और यदि रोकना था तो यह ख़लीफ़-ए-वक़्त का दायित्व है कि रोके अथवा जमाअती निज़ाम के द्वारा रोके। अल्लाह तआला हम सबको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नियुक्ति के उद्देश्य को समझने तथा इसके अनुसार कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में आदरणीय सअदी साहिबा पत्नि आदरणीय मुस्लेहुद्दीन सअदी साहब मरहूम तथा आदरणीय सय्यदा मुबारका बेगम साहिबा पत्नि आदरणीय अब्दुल बारी साहब के जनाज़ों के साथ आदरणीय नूरुददीन चिराग़ साहब जो चिराग़ दीन साहब मरहूम ऑफ़ क़दियान के बेटे थे जिनकी 15 मार्च को 45 वर्ष की आयु में लंदन में निधन हुआ था। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनके सद्गुणों तथा सेवाओं का वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़े पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।